स्थानीय स्वशासन और बदलती ग्रामीण शक्ति संरचना

हरिनदन कुशवाहा शीनियार रिसर्च केंद्र समाजशास्त्र विभाग लखनऊ: विश्वविद्यालय लखनऊ

सार संपेक्ष

प्रारंभ से ही ग्राम एक समुदाय में संगठित रहा है और ग्रामीण संरचना प्रारंभ से सामुदायिक आधार पर खड़ी रही है। परम्परागत ग्रामीण समाज में जाति प्रथा अव्यस्था कठोर थी जाति समितियाँ एवं जाति पंचायतें अल्पविधि शक्तिशाली थीं और जाति ही व्यक्तियों की गतिशीलता के लिए असरदार और प्रस्तिंत का निर्धारण करती थी। परंपरागत शक्ति संरचना में शांति व्यवस्था के प्रमुख आयाम जमींदारी प्रथा जाति प्रथा और ग्राम/जाति पंचायत थे। ग्रामीण अपनी सामाजिक आर्थिक और अन्य समस्याएं का रूपांतरण लागू कर नए ग्रामीण शक्ति संरचना में शाक्ती, अनुवादक और जाति ही एक विशेष प्रस्तिंत का निर्धारण करते थे।

स्वतन्त्रता के पश्चात जमींदारी व जमींदारी प्रथाएं समाप्त कर दी गई और अनेक भूमियों सुधार में निर्मल लोग नेता बन गए जिनसे परम्परागत शक्ति संरचना को नष्ट और नवीन शक्ति संरचना की जन्म दिया। आनुवंशिक और जाति मुख्यों के स्थान पर राजनीतिक पूर्ववर्ती भूमि के चुने हुए लोग नेता बन गये। नेतृत्व में व्यक्तिगत गुण न कि जाति मुख्य कारक बन गये हैं। 73वें संविधान संशोधन के उपर्युक्त नवीन पंचायती राज व्यवस्था में सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के हजारों प्रतिनिधियों को भी चुनाव में जीत मिली है। ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन हुआ है और मुख्य नवीन शक्ति संरचना का जन्म दिया। आनुवंशिक और जाति मुख्यों के स्थान पर राजनीतिक पूर्ववर्ती भूमि के चुने हुए लोग नेता बन गये।

मुख्य शब्द: लोकतन्त्र ग्रामीण पंचायती राज शक्ति संरचना नेतृत्व।
प्रस्तावना

लोकतन्त्र एक ऐसी व्यवस्था है जो प्रत्येक व्यक्ति (चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, रंग या पहचान से सम्बद्ध हो) को राजनीति समूह या राष्ट्र राज्य के मामलों में भाग लेने का अधिकार प्रदान करता है। लोकतान्त्रिक मूल्यों के चलन एवं राजनीतिक स्वतंत्रता से सभी व्यक्तियों को यह अवसर प्राप्त हुआ है कि वे अपनी पहचान, स्थिति, प्रतिबंधता, और इच्छाओं में निहित हितों और मूल्यों मुख्य चेतना और अचेतना के चारों और रहकर स्वतंत्रता का विवाद कर सकें। राजनीतिक स्वतंत्रता ने सामान्य जनजातीय प्रधान, जाति-रंगीन और राज्यों के राज्यों का उन्मूलन करके भारतीय समाज की संरचना और इसकी अधिकार प्रणाली में भारी परिवर्तन करने का मार्ग प्रशास्त किया है।

इसने भारतीय ग्रामीण समाज के आर्थिक एवं सामाजिक आधार में क्रांति लाने का कार्य किया है (आहुजा, 2011:23).

भारत मूलतः गाँवों का देश है जहाँ 6 लाख से भी अधिक गाँव हैं जिनका जीवन स्तर एक-दूसरे से भिन्न है और कई जगहों पर कुछ समानताएं भी पायी जाती हैं। ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है जो छोटे से केंद्र के चारों और संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं (मेरिल, एड, एलिज, 1949)। ग्रामीण समाज अंतर्जातिक स्थिर समाज होते हैं। उनमें सापेक्ष रूप से गतिशीलता का अभाव होता है। ग्रामीण समुदाय का एक निश्चित भोगोलिक क्षेत्र होता है। इसी में व्यक्ति निवास करते हैं। उनका मुख्य पेशा कृषि होता है। समुदाय में उनका सामान्य जीवन व्यतीत होता है। ग्रामीण समुदाय में सामुदायिक भावना पाई जाती है (मुकर्जी, 2006:33)।"
एक सशक्त पंचायती राज व्यवस्था में न केवल विकास की गति तेज होती है, बल्कि संगठनों एवं संस्थाओं के लिए अनुकूल वातावरण मिलता है। चुनाव में सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के हजारों प्रतिनिधियों को भी चुनाव में जीत मिली है, पर इसके बाद भी उनकी चुनौतियां खस्त नहीं हुई हैं, बल्कि पद प्राप्‌त करने के बाद वास्तविक चुनौतियों से उनका सामना होता है। उन्होंने अपने बल पर अपनी जमीन तलाशने का काम शुरू भी कर दिया है। शक्ति, सत्य और नेतृत्व के प्रति संस्थाओं में पंचायती राज व्यवस्था के लाभ होने के बाद एक बदलाव आया है। इन बदलावों की परिक्रमा समाज की अवश्यकता है जो वर्तमान समय के अनुसार हो।
पंचायती राज व्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ ऐसी समस्याओं को जन्म दिया है जो ग्रामीण जीवन के विघटन के लिए जिम्मेदार हैं। कुछ कारणों से इस व्यवस्था ने गांवों में व्याप्त जातिवाद, दलबंदी की भावना, अकुशल राजनीतिक नेतृत्व, भ्रष्टाचार व निजी स्वार्थों में टकराव की प्रक्रिया आदि को बढ़ाया है। इसकी वजह से पंचायती राज संस्थाएं एक टिकाऊ व जवाबदेह जन निकाय का दर्जा प्राप्त नहीं कर पाई है। अतः आवश्यकता है कि इन कारणों का पता लगाया जाए। प्रस्तुत शोधपत्र में "स्थानीय स्वशासन एवं बदलती ग्रामीण शक्ति संरचना" शीर्षक के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के हर्दोई जिले में स्थित एक ग्राम पंचायत की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना में परिवर्तन की प्रकृति का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं:-

भारतीय ग्रामीण समाज की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना का अध्ययन करना।

ग्रामीण शक्ति संरचना में जातीय वर्गों के प्रभाव का अध्ययन करना।

ग्रामीण शक्ति संरचना में पंचायतीराज व्यवस्था की भूमिका का विवेचन करना।

चयनित ग्राम पंचायत की शक्ति संरचना एवं उसमें परिवर्तन की प्रकृतियों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

संबंधित साहित्य से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शोध सम्बन्धी प्रश्नों का उठाया गया है:-

73वें संविधान संशोधन लागू होने के पश्चात नवीन पंचायती राज व्यवस्था के फलस्वरूप ग्रामीण शक्ति संरचना में क्या परिवर्तन आया है?

क्या आज भी बड़े भूमिकाधीन एवं राजनीतिक रूप से सक्रिय परिवारों का ही स्थानीय शक्ति संरचना पर आधिपत्य है?

पंचायती राज व्यवस्था लागू होने के पश्चात क्या बंचित वर्ग के लोगों में राजनीतिक एवं नेतृत्व की चेतना आई है?

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक है, जिसमें वर्णनात्मक शोध प्रस्ताव का प्रयोग किया गया है। इसमें उत्तर प्रदेश के हर्दोई जिले के बहलोलपुर ग्राम पंचायत का भित्ति आदानी के आधार पर उद्देश्यपूर्ण निदारण विधि से चयन कर जनसंख्या के 120 परिवारों का दैव निदर्शन विधि से चयन किया गया है तथा प्रत्येक परिवार से 01 वयस्क सदस्य का आक्रमित विधि से चयनकर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दशाओं से समाधित ओँकड़ों का संकलन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यों एवं शोध प्रश्नों के आधार पर संकलित ओँकड़ों का विश्लेषण कर स्थानीय स्वशासन एवं बदलती ग्रामीण शक्ति संरचना के मध्य सह-सम्बन्धों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है।
आँकड़ों का ववश्लेषण एवं व्याख्या

वैष्णविक परिवेश- तालिका सं0 1 में उत्तरदाताओं के वैष्णविक परिवेश को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि 86.67% उत्तरदाता हिंदू एवं 13.33% उत्तरदाता मुस्लिम धर्म को मानने वाले हैं। वहीं 39.17% उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के, 35% उत्तरदाता अन्य जाति के तथा 25.83% उत्तरदाता सामाजिक वर्ग में हैं। शैक्षिक स्तर के अनुसार 44.17% उत्तरदाताओं ने हाईस्कूल/इंटरमीडियट तक, 23.33% उत्तरदाताओं ने प्राइमरी/जूनियर हाईस्कूल तक तथा 19.17% उत्तरदाताओं ने नातक या उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त की हैं, जबकि 13.33% उत्तरदाताओं ने किसी भी प्रकार की औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की है।

तालिका सं0 1: उत्तरदाताओं का वैष्णविक परिवेश

<table>
<thead>
<tr>
<th>धर्म</th>
<th>हिंदू</th>
<th>मुस्लिम</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>104 (86.67)</td>
<td>16 (13.33)</td>
</tr>
<tr>
<td>सामाजिक वर्ग</td>
<td>सामाजिक वर्ग</td>
<td>अपूर्ण जाति</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>31 (25.83)</td>
<td>47 (39.17)</td>
</tr>
<tr>
<td>शैक्षिक स्तर</td>
<td>निरंतर/साधार</td>
<td>प्राइमरी/जूनियर हाईस्कूल</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>16 (13.33)</td>
<td>28 (23.33)</td>
</tr>
</tbody>
</table>

परिवारिक स्वरूप-तालिका सं0 2 में उत्तरदाताओं के परिवारिक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका से स्पष्ट होता है कि 57.5% उत्तरदाताओं के परिवार की प्रकृति संयुक्त एवं 22.5% उत्तरदाताओं के परिवार की प्रकृति एकाकी है। वहीं परिवार के प्रमुख व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण देखा जाय, तो स्पष्ट होता है कि 99.5% उत्तरदाताओं के परिवार का प्रमुख व्यवसाय नौकरी या मजदूरी है, जबकि 7.5% उत्तरदाताओं के परिवार का प्रमुख व्यवसाय पर्यावरणत्त्व स्वरूप है।

तालिका सं0 2: उत्तरदाताओं का परिवारिक परिवेश

<table>
<thead>
<tr>
<th>परिवार की प्रकृति</th>
<th>एकाकी</th>
<th>संयुक्त</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>51 (42.50)</td>
<td>69 (57.50)</td>
</tr>
<tr>
<td>व्यवसाय</td>
<td>कृषि/मजदूरी</td>
<td>व्यापार</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>99 (82.50)</td>
<td>9 (7.50)</td>
</tr>
<tr>
<td>मासिक आय (रू. में)</td>
<td>2 से कम</td>
<td>2 से 5</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>23 (19.17)</td>
<td>29 (24.17)</td>
</tr>
<tr>
<td>परिवार में संख्या</td>
<td>3-4</td>
<td>5-6</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या (प्रतिशत)</td>
<td>17 (14.17)</td>
<td>37 (30.83)</td>
</tr>
</tbody>
</table>

वहीं 27.5% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु.0 5 से 10 हजार के मध्य है, जबकि 24.17% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु.0 2 से 5 हजार, 22.5% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु.0 10 से 20 हजार, 19.17% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु.0 2 से कम तथा 6.67% उत्तरदाताओं के परिवार की मासिक आय रु.0 20 से अधिक है।
राजनीतिक सहभागिता की स्थिति - राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृत्ति का अध्ययन करने के लिए उत्तरदाताओं से पंचायत चुनाव के किसी भी स्तर में प्रचार, मतदान एवं उम्मीदवारी में भाग लेने की वर्तमान एवं 10 वर्ष पूर्व की स्थिति में सम्बन्धित सूचनाओं का संग्रह कर उनका विश्लेषण निम्नवत् किया गया है -

चित्र सं0 1 में उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 40% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है, जबकि 32.5% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति में सामान्य तथा 27.5% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति में बहुत कम परिवर्तन हुआ है।

चित्र सं0 1: उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति में परिवर्तन

तालिका सं0 3 में उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की सामाजिक वर्गवार स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के 45.25% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में बहुत अधिक वृद्धि हुई है, जबकि इस सामाजिक वर्ग के 38.1% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में सामान्य वृद्धि तथा 18.67% उत्तरदाताओं में बहुत कम वृद्धि हुई है। सामाजिक वर्ग के 44.68% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में सामान्य, 29.79% उत्तरदाताओं में बहुत अधिक तथा 25.53% उत्तरदाताओं में बहुत कम वृद्धि हुई है। इसके विपरीत सामान्य वर्ग के 45.16% उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में बहुत कम, 35.48% उत्तरदाताओं में सामान्य तथा 19.35% उत्तरदाताओं में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

तालिका सं0 3: सामाजिक वर्गवार उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृत्ति
<table>
<thead>
<tr>
<th>परिवर्तन की स्थिति</th>
<th>आयु वर्गवार उत्तरदाताओं का विवरण</th>
<th>बहुत कम</th>
<th>सामान्य</th>
<th>बहुत अधिक</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अनु° जाति</td>
<td>संख्या</td>
<td>प्रतिशत</td>
<td>संख्या</td>
<td>प्रतिशत</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत कम</td>
<td>7</td>
<td>16-67</td>
<td>12</td>
<td>25-53</td>
<td>14</td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>16</td>
<td>38-10</td>
<td>21</td>
<td>44-68</td>
<td>11</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत अधिक</td>
<td>19</td>
<td>45-24</td>
<td>14</td>
<td>29-79</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>42</td>
<td>100-00</td>
<td>47</td>
<td>100-00</td>
<td>31</td>
</tr>
</tbody>
</table>

तालिका सं0 4: सामाजिक वर्गवार उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृति में अन्तर की सार्थकता

<table>
<thead>
<tr>
<th>सामाजिक वर्ग</th>
<th>राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृति</th>
<th>बहुत कम</th>
<th>सामान्य</th>
<th>बहुत अधिक</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अनु° जाति</td>
<td>सामाजिक वर्ग</td>
<td>प्राप्त अनुभावित</td>
<td>प्राप्त अनुभावित</td>
<td>प्राप्त अनुभावित</td>
<td>प्राप्त अनुभावित</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत कम</td>
<td>7</td>
<td>11-55</td>
<td>16</td>
<td>16-80</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>12</td>
<td>12-93</td>
<td>21</td>
<td>18-80</td>
<td>14</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत अधिक</td>
<td>14</td>
<td>8-53</td>
<td>11</td>
<td>12-40</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल</td>
<td>33</td>
<td>33</td>
<td>48</td>
<td>48</td>
<td>39</td>
</tr>
</tbody>
</table>

तालिका सं0 4 से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृति में सामाजिक वर्गवार स्थिति में अन्तर है। इस अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए काई-वर्ग परीक्षण का प्रयोग किया गया है, जिसका विवरण निम्नवित है:

काई-वर्ग का प्राप्त मान = 9.680

स्वतन्त्रता अंश (df) = (3-1) × (3-1) = 2 × 2 = 4

सम्भाव्यता स्तर = 0.05

स्वतन्त्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई-वर्ग = 9.488

उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृति में सामाजिक वर्गवार स्थिति का आगमित काई-वर्ग मान (9.68) स्वतन्त्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता स्तर 0.05 पर तालिका काई-वर्ग (9.488) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक वर्गवार उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृति में सार्थक अन्तर है।

ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृति -
वचत्र सं0 2: ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन

तालिका सं0 5 में दर्शित ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृति के समबन्ध में उत्तरदाताओं की राय का विवरण करने के स्पष्ट है कि अनावृत जाति के 45.24% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है, जबकि इस वर्ग के 35.71% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना के सामान्य तथा 19.05% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। वहाँ अध किछु वर्ग के 38.3% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत अधिक, 34.04% उत्तरदाताओं के अनुसार सामान्य तथा 27.66% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। इसके विपरीत सामान्य वर्ग के 51.61% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत कम, 29.03% उत्तरदाताओं के अनुसार सामान्य तथा 19.35% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है।

तालिका सं0 5: ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन के बारे में उत्तरदाताओं की सामाजिक वर्गवार राय

<table>
<thead>
<tr>
<th>परिवर्तन की स्थिति</th>
<th>सामाजिक वर्गवार</th>
<th>उत्तरदाताओं का विवरण</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>प्राप्त जाति</td>
<td>अनुसार वर्ग</td>
<td>सामान्य तथा प्रतिशत</td>
</tr>
<tr>
<td>संख्या</td>
<td>प्रतिशत</td>
<td>संख्या</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत कम</td>
<td>8 वर्ग</td>
<td>19.05 वर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>15 वर्ग</td>
<td>35.71 वर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत अधिक</td>
<td>19 वर्ग</td>
<td>45.24 वर्ग</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>42 वर्ग</td>
<td>100.00 वर्ग</td>
</tr>
</tbody>
</table>

काई-वर्ग का प्राप्त मान = 10.103*

तालिका सं0 5 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत अधिक परिवर्तन होना मानने वालों में सबसे अधिक उत्तरदाता अनु0 जाति (19.35%) से हैं। इसके विपरीत बहुत कम परिवर्तन होना मानने वाले उत्तरदाताओं में सबसे अधिक उत्तरदाता सामान्य वर्ग (51.61%) से तथा सबसे कम उत्तरदाता अनुसूचित जाति (19.05%) के हैं। इस अंतर का आगाधित काई-वर्ग मान 10.103 है, जो खंततता अंश 4 एवं संभावना स्तर 0.05 पर सारणी काई-वर्ग मान (9.488) से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृति के समबन्ध में उत्तरदाताओं की राय में सामाजिक वर्गवार सार्थक अंतर है।

तालिका सं0 6: ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन के बारे में उत्तरदाताओं की आर्थिक वर्गवार राय
परिवर्तन की स्थिति | आर्थिक वर्गवार उत्तरदाताओं का विवरण
<p>| निम्न | मध्यम | उच्च |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बहुत कम</td>
<td>11</td>
<td>21.15</td>
<td>10</td>
<td>28.57</td>
<td>16</td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>16</td>
<td>30.77</td>
<td>14</td>
<td>40.00</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत अधिक</td>
<td>25</td>
<td>48.08</td>
<td>11</td>
<td>31.43</td>
<td>7</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>52</td>
<td>100.00</td>
<td>35</td>
<td>100.00</td>
<td>33</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कई वर्ग का प्राप्त मान = 9.967*

तालिका सं6 में दर्शित ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की आर्थिक वर्गवार राय का विश्लेषण करने से पहचान है कि निम्न आर्थिक स्थिति वाले 48.08% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है, जबकि इस वर्ग के 30.77% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में सामान्य तथा 21.15% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। वहीं मध्यम आय वर्ग के 40% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में सामान्य, 31.43% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत अधिक तथा 28.57% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। इसके विपरीत उच्च आयवर्ग के 48.08% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत कम, 30.3% उत्तरदाताओं के अनुसार सामान्य तथा 21.21% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है।

परिवर्तन की स्थिति | शैक्षिक स्थिति के अनुसार उत्तरदाताओं का विवरण
<p>| निम्न | मध्यम | उच्च |</p>
<table>
<thead>
<tr>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
<th>संख्या</th>
<th>प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बहुत कम</td>
<td>8</td>
<td>22.22</td>
<td>13</td>
<td>26.53</td>
<td>16</td>
</tr>
<tr>
<td>सामान्य</td>
<td>12</td>
<td>33.33</td>
<td>19</td>
<td>38.78</td>
<td>9</td>
</tr>
<tr>
<td>बहुत अधिक</td>
<td>16</td>
<td>44.44</td>
<td>17</td>
<td>34.69</td>
<td>10</td>
</tr>
<tr>
<td>योग</td>
<td>36</td>
<td>100.00</td>
<td>49</td>
<td>100.00</td>
<td>35</td>
</tr>
</tbody>
</table>

तालिका सं7: ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन के बारे उत्तरदाताओं की शैक्षिक वर्गवार राय
वर्ग का प्राप्त मान = 5.996

तालिका सं° 7 में दर्शित ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की शैक्षिक वर्गवार राय का विश्लेषण करने से स्पष्ट है कि निम्न शैक्षिक स्थिति वाले 44.44% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत अधिक परिवर्तन हुआ है, जबकि इस वर्ग के 33.33% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में सामान्य तथा 22.22% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। वहीं मध्यम शैक्षिक स्थिति के 38.78% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में सामान्य, 34.69% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत अधिक तथा 26.53% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत कम परिवर्तन हुआ है। इसके विपरीत उच्च शैक्षिक स्थिति के 45.71% उत्तरदाताओं के अनुसार ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत कम, 28.57% उत्तरदाताओं के अनुसार बहुत अधिक तथा 25.71% उत्तरदाताओं के अनुसार सामान्य परिवर्तन हुआ है।

तालिका सं° 7 से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में बहुत कम परिवर्तन होना मानने वालों में सबसे अधिक उत्तरदाता उच्च शैक्षिक स्थिति (45.71%) से तथा सबसे कम उत्तरदाता निम्न शैक्षिक स्थिति (22.22%) के हैं। इसके विपरीत बहुत अधिक परिवर्तन होना मानने वाले उत्तरदाताओं में सबसे अधिक उत्तरदाता निम्न शैक्षिक (44.44%) के तथा सबसे कम उत्तरदाता उच्च शैक्षिक स्थिति (28.57%) के हैं। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय में शैक्षिक वर्गवार अन्तर है, परन्तु इस अन्तर का आण्वित काई-वर्ग मान 5.996 है, जो स्वतंत्रता अंश 4 एवं सम्भाव्यता सटर 0.05 पर तालिका काई-वर्ग मान (9.488) से कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की शैक्षिक वर्गवार राय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत् हैं:-

सामाजिक वर्गवार उत्तरदाताओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवर्तन की प्रवृत्ति में सार्थक अन्तर है (तालिका काई-वर्ग मान 9.68)। इसका कारण यह है कि सामाजिक जाति के लोगों में पूर्व में राजनीतिक सहभागिता की उच्च स्थिति थी, परन्तु नवीन पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत कमजोर सामाजिक वर्ग को मिल रहे अवसरों के कारण उनकी राजनीतिक सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय में सामाजिक वर्गवार सार्थक अन्तर है (तालिका काई-वर्ग मान 10.103)। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण शक्ति संरचना में परिवर्तन तो हुआ है और इस परिवर्तन के फलस्वरूप अनुपूर्णता जाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के नये नेतृत्व का उदय भी हुआ है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से प्रभुत्वशाली जातियाँ इसे स्वीकार करने पर हिचक रही है।
ग्रामीण शक्ति संर्ना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के समबंध में उत्तरदाताओं की राय में आर्थिक वर्गवार सार्थक अन्तर भी है (आगणित काई-वर्ग मान 9.967)। आर्थिक वर्गवार उत्तरदाताओं की राय में सार्थक अन्तर होने का कारण यह हो सकता है कि नवीन पंचायती राज व्यवस्था के फलस्वरूप ग्रामीण शक्ति संर्ना में जो परिवर्तन हुआ है, वह मुख्यतः राजनीतिक नेतृत्व में ही अधिक प्रभावी है। इसका ग्रामीण आर्थिक संर्ना पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। आर्थिक रूप से समस्त ग्रामीण अभी भी एक शक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

ग्रामीण शक्ति संर्ना में परिवर्तन की प्रवृत्ति के समबंध में उदाताओं की राय में नशक्ष के साथ अथि होने का कारण यह हो सकता है नक नवीन पंचायती राज व्यवस्था जो परिवर्तन हुआ है, वह मुख्यतः राजनीतिक नेतृत्व में ही अधिक प्रभावी है। इसका ग्रामीण आर्थिक संर्ना पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है। आर्थिक रूप से समस्त ग्रामीण अभी भी एक शक्ति के रूप में जाने जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
अटल, योगेश (1971), लोकल कूननटीज एवं नेशनल पालनटस, नेशनल पालनशंग हाउस, नद्ली।
काला, सुधा (2008), पंचायती राज ग्रामीण विकास का राज, कुरूक्षेत्र, वष-54, अगस्त पृ 17-20।
कोठारी, राजनी (1970), कास्ट इन इन्डियन पालिटिक्स, ओरिएंट लॉगमे, नई दिल्ली।
टिकर हयूज (1967), दि फाउन्डेशन ऑफ लोकल-गवर्नमेंट इन इन्डिया, बांग्लादेश एब्बा, लालवानी पालनशंग, लालवानी।
मुक्कर, आरोके (2006), पीसीएफ इन इन्डिया, बांग्लादेश एब्बा, लालवानी पालनशंग, लालवानी।
मेरिल, एफ जी (1949), कर्ि एसोसिएटी, प्रेंनटस हाल, ब्लाइक।
नवीन, आरोके (1987), सेलेक्ट इंसनक्रश, सेलेक्ट इंसनक्रश, कलकाता।
शमाच, अशोक (2002), भारत में नवीन राज्य संसाद, आरोके।